प्रश्न–पत्र का ब्लू प्रिंट

Blue Print of Question Paper

परीक्षा हायर सेकेण्डरी

कक्षाः **XII**

विषय–अर्थशास्त्र

पूर्णांकः 100

समय–3 घन्टे

क्रमांक	इकाई	आवंटित अंक	वस्तुनिष्ठ प्रश्न	अंकवार प्रश्नों की संख्या			कुल प्रश्न
			अंक 01	अंक 04	अंक 05	अंक 06	
1.	समष्टि एवं व्यष्टि अर्थशास्त्र	05	1	1	–	–	01
2.	मांग एवं पूर्ति	16	1	1	1	1	03
3.	बाजार के प्रकार एवं मूल्य निर्धारण	06	2	1	–	–	01
4.	राष्ट्रीय आय एवं लेखांकन पद्धति	08	3	–	1	–	01
5.	आय एवं रोजगार का निर्धारण	10	1	1	1	–	02
6.	मुद्रा तथा बैंकिंग	10	4	–	–	1	01
7.	भुगतान शेष एवं व्यापार	07	3	1	–	–	01
8.	लोक वित्त	06	2	1	–	–	01
9.	सरकारी बजट एवं अर्थव्यवस्था	08	3	–	1	–	01
10.	सॉंख्यिकी	24	5	2	1	1	04
	प्रायोजना कार्य (केवल व्यावहारिक ज्ञान हेतु पुनरावृत्ति) **योग**	**100**	**(25)त्र05**	**08**	**05**	**03**	**16**
			व.नि.प्र.त्र05				**. 05 21**

निर्देशः–

1. प्रश्न कं. 01 से 05 तक 5–5 अंक के 5 वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे जिसमें 1–1 अंक के 5 उपप्रश्नों के समूह निहित होंगे, वस्तुनिष्ठ प्रश्न निम्न प्रकार के हो सकते हैं –यथा–बहुविकल्पीय प्रश्न रिक्त स्थान की पूर्ति सत्य/असत्य, का चिन्ह लगाइये, सही जोड़ी बनाइये तथा एक शब्द में उत्तर देना आदि।
2. प्र. क. 06 से 13 तक लघुउत्तरीय प्रश्न हैं तथा प्र.क्र. 14 से 21 तक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं।
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को छोड़कर शेष सभी प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिये जा सकेंगे। विकल्प वाले प्रश्न समान इकाई व समान कठिनाई स्तर के होना चाहिये।
4. वस्तुनिष्ठ प्रश्न 05. विवरणात्मक प्रश्न त्र 16 कुल प्रश्न संख्या त्र 21
   (अंक 25). (अंक 75) त्र कुल अंक योग त्र 100 अंक

विषयानुसार प्रश्न की योजना

Subject wise scheme of Question Framing

कक्षा – 12 वीं
विषय – अर्थशास्त्र **पूर्णांक – 100**

समय – 3 घण्टे

(अ) उद्देश्य के अनुसार मान			
स.क्रं.	उद्देश्य	अंक	प्रतिशत
1.	ज्ञान (ज्ञदवूसमकहम)	35	35 :
2.	अवबोध (न्दकमतेजंदकपदह)	50	50 :
3.	अनुप्रयोग एवं कौशल ;।चचसपबंजपवद –ैापससद्ध	15	15 :
	योग	100	100 :

(ब) कठिनाई स्तर (क्पििपबनसजल स्मअमस)			
स.क्रं.	प्रश्न का स्तर	अंक	प्रतिशत
1.	सरल (म्ंल)	35	35 :
	सामान्य (।अमतंहम)	50	50 :
	कठिन (क्पििपबनसज)	15	15 :
	योग	100	100 :

प्रादर्श प्रश्न पत्र – अर्थशास्त्र
कक्षा – 12 वीं

पूर्णांक : 100 **समय : 3 घन्टे**

निर्देश :–

1. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
2. प्रश्न क्रमांक 1 से 5 तक पांच प्रकार के वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रकार के प्रश्न पर 5 अंक निर्धारित हैं।
3. प्रश्न क्रमांक 6 से 13 तक लघुउत्तरीय प्रश्न हैं, प्रत्येक प्रश्न पर 4 अंक निर्धारित हैं तथा प्रश्न क्रमांक 14 से 18 तथा 19 से 21 तक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न है। जिनमें प्रत्येक पर क्रमशः 5 व 6 अंक निर्धारित हैं।
4. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को छोड़कर सभी प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिये गए हैं।

प्रश्न. 1.

(अ) सही विकल्प चुनकर लिखिये :– **(5)**

1. किसी अर्थव्यवस्था में चयन की संभावनाओं को व्यक्त किया जा सकता है :–

(अ) तटस्थता वक्र द्वारा (ब) समोत्पाद वक्र द्वारा
(स) मांग वक्र द्वारा (द) उत्पादन संभावना वक्र द्वारा

2. भारत में राष्ट्रीय आय की गणना का कार्य करता है :–

(अ) राष्ट्रीय आय समीति (ब) केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन
(स) राष्ट्रीय न्यादर्श निदेशालय (द) वित्त मंत्रालय

3. मुद्रा प्रसार से लाभान्वित होने वाले वर्ग हैं :–

(अ) ऋणदाता वर्ग (ब) ऋणीवर्ग
(स) मध्यम वर्ग (द) श्रमिक वर्ग

4. राजकोषीय घाटे तथा भुगतान किये जाने वाले ब्याज का अंतर कहलाता है :–

(अ) वित्तीय घाटा (ब) प्राथमिक घाटा
(स) राजस्व घाटा (द) उपरोक्त सभी

5. एक श्रेणी का विचलन कहलाता है –

(अ) विचलन (ब) माध्य
(स) मध्यिका (द) अपकिरण

प्रश्न. 2.

ब. खण्ड ''क'' एवं ख की सही जोड़ी बनाईये। **(5)**

''क''		''ख''	
1.	प्रचालन अधिशेष	1.	रोजगार ब्याज एवं मुद्रा का सामान्य सिद्धांत
2.	रिजर्व बैंक	2.	ऋणात्मक
3.	कीन्स	3.	उत्पादकता का सिद्धांत
4.	भारत का विदेशी व्यापार	4.	संपत्ति एवं उद्यम से प्राप्त आय
5.	बैस्टेबल	5.	नोट निर्गमन

प्रश्न. 3.

स. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये **(5)**

1. एक फर्म अधिकतम लाभ...अवस्था में प्राप्त करती है।
2. मूल्य विभेद .... बाजार की विशेषता है।
3. .... संतुलन में दृश्य एवं अदृश्य दोनो मदे सम्मिलित रहती हैं।
4. रेल बजट संसद में ....पारित करता है।
5. प्रमाप विचलन में बीज गणितीय चिन्हों पर .... दिया जाता है।

प्रश्न. 4.

द. सही/गलत बताईये **(5)**

1. सामान्य मूल्य मांग व पूर्ति की अस्थायी शक्तियों द्वारा निर्धारित होता है।
2. मुद्रा संकुचन में रोजगार के अवसर बढ़ते हैं।
3. नई व्यापार नीति की घोषणा वर्ष 2000 में की गई थी।
4. बजट में सरकारी ऋणों का उल्लेख होता है।
5. जीवन निर्वाह लागत सूचकांक की रचना करते समय फुटकर मूल्य लिये जाते हैं।

प्रश्न. 5.

इ. एक शब्द में उत्तर दीजिये – **(5)**

1. एक अर्थ व्यवस्था जिसका शेष विश्व से कोई संबंध नही होता है।
2. कृषकों को दीर्घकालीन ऋण देने वाली संस्था का नाम बताईये।
3. अधिकतम सामाजिक लाभ के सिद्धांत का प्रतिपादन किसने किया ?
4. सरकार के प्रशासन के वेतन, सेना पुलिस आदि पर किये जाने वाला व्यय कौन सा व्यय कहलाता है ?
5. आधार वर्ष का निर्देशांक क्या होता है ?

प्रश्न 6. व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र में चार अंतर स्पष्ट कीजिए। (4)

अथवा

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की किन्ही चार केन्द्रीय समस्याओं को हल करने के बिन्दु स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 7. मांग को निर्धारित करने वाले किन्ही चार तत्वों को बताईये (4)

अथवा

मांग से आप क्या समझते हैं ? इसके नियम के कोई तीन अपवाद बताईये।

प्रश्न 8. बाजार के विस्तार को प्रभावित करने वाले चार तत्वों को समझाइये। (4)

अथवा

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार का आशय स्पष्ट कर उसकी तीन विशेषताएं लिखिए।

प्रश्न 9. पूर्ण रोजगार का अर्थ बताइए। पूर्ण रोजगार प्राप्त करने के लिए क्या उपाय हैं ? (कोई तीन) (4)

अथवा

उपभोग फलन का अर्थ एवं तीन महत्व बताइये।

प्रश्न 10. निर्यात बढ़ाने हेतु चार सरकारी प्रयास लिखिये। (4)

अथवा

विदेशी विनियम दरों में परिवर्तन के चार कारण स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 11. सार्वजनिक वित्त तथा निजी वित्त में चार अन्तर बताइये। (4)

अथवा

प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कर का अर्थ समझाते हुए इनमें कोई दो अन्तर लिखिए।

प्रश्न 12. निर्देशांक किसे कहते हैं ? इनकी रचना करते समय कौन–सी सावधानियां रखनी चाहिए ? (कोई तीन) (4)

अथवा

विस्तार से क्या आशय है ? विस्तार के तीन गुण बताइये।

प्रश्न 13. निर्देशांक आर्थिक बैरोमीटर के समान होते हैं। बताइये। (4)

अथवा

माध्य विचलन के दो गुण एवं दो दोष बताइये।

प्रश्न 14. पूर्ति की लोच का अर्थ एवं पूर्ति की लोच को प्रभावित करने वाले चार तत्व बताइये (5)

अथवा

स्थिर लागत एवं परिवर्तनशील लागत अर्थ समझाते हुए इनमें प्रमुख तीन अन्तर बताइये।

प्रश्न 15. राष्ट्रीय आय की परिभाषा दीजिए सकल एवं शुद्ध घरेलू उत्पाद तथा सकल एवं शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद किसे कहते हैं ? (5)

अथवा

राष्ट्रीय आय की मापन की तीनों विधियों के नाम लिखिए। मूल्य वृद्धि विधि को उदाहरण द्वारा समझाइये।

प्रश्न 16. रोजगार के परम्परावादी सिद्धांत तथा कीन्स के सिद्धांत में पांच अन्तर लिखिए (5)

अथवा

विनियोग गुणक का अर्थ एवं गुणक सिद्धांत की दो सीमाएं एवं दो महत्व समझाइए।

प्रश्न 17. घाटे के बजट से क्या आशय है ? इसके अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले चार प्रभाव लिखिए। (5)

अथवा

सरकारी बजट की प्रमुख पांच विशेषताएं बताइये

प्रश्न 18. निर्देशांकों के पांच महत्व बताइये। (5)

अथवा

अपकिरण का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसके चार उददेश्य बताइये

प्रश्न 19. मांग के नियम की चित्र सहित व्याख्या कीजिए एवं स्पष्ट कीजिए मांग वक्र के बाएं से दाएं नीचे की ओर झुकने के क्या कारण है ? (6)

अथवा

फर्म के साम्य का अर्थ एवं साम्य विश्लेषण की मान्यताएं बताइये।

प्रश्न 20. मुद्रा की परिभाषा तथा इसके कार्यों की विवेचना कीजिए। (6)

अथवा

रिजर्व बैंक के चार प्रमुख कार्य एवं दो वर्जित कार्य बताइये।

प्रश्न 21. निम्न सारणी से प्रमाप विचलन की गणना कीजिए। (6)

वर्ग	0 –10	10 – 20	20 – 30	30 – 40	40 – 50	50 – 60	60 – 70
आवृत्ति	10	15	25	25	10	10	5

अथवा

निम्न समंकों से श्रेणी अन्तर रीति द्वारा सह–सम्बन्ध गुणांक निकालिए।

ग. श्रेणी	53	98	95	81	75	61	59	55
ल. श्रेणी	47	25	32	37	30	40	39	45

आदर्श उत्तर–अर्थशास्त्र
कक्षा–12वीं

उत्तर 1.

अंक

(अ) सही विकल्प (5)

1. द – उत्पादन संभावना वक्र
2. ब – केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन
3. ब – ऋणी
4. ब – प्राथमिक घाटा
5. द – अपकिरण

(ब) सही जोड़ी (5)

1.	प्रचालन अधिशेष	4.	संपति एवं उद्यम से प्राप्त आय
2.	रिजर्व बैंक	5.	नोट निर्गमन
3.	कीन्स	1.	रोजगार ब्याज एवं मुद्रा का सामान्य सिद्धांत
4.	भारत का विदेशी व्यापार	2.	ऋणात्मक
5.	बैस्टबल	3.	उत्पादकता का सिद्धांत

(स) रिक्त स्थानों में भरे जाने वाले सही शब्द (5)

1. संतुलन 2. एकाधिकार 3. भुगतान
4. रेलमंत्री 5. ध्यान

(द) सही उत्तर है :– (5)

1. गलत 2. गलत 3. गलत 4. सही
5. सही

(इ) एक शब्द में उत्तर (5)

1. बंद अर्थव्यवस्था 2. कृषि ग्रामीण विकास बैंक 3. प्रो. डॉल्टन
4. गैर विकासात्मक व्यय 5. सौ (100)

उत्तर 6.

	व्यष्टि–अर्थशास्त्र	समष्टि–अर्थशास्त्र
1.	व्यष्टि अर्थशास्त्र में छोटी–छोटी वैयक्तिक इकाइयों का अध्ययन किया जाता है, जैसे एक व्यक्ति, एक परिवार, एक फर्म, एक उद्योग	समष्टि अर्थशात्र में इकाइयों के योग अर्थात् राष्ट्रीय योगों का अध्ययन किया जाता है, जैसे कुल राष्ट्रीय आय कुल रोजगार, कुल विनियोग, कुल उपभोग आदि।
2.	व्यष्टि अर्थशास्त्र पूरे समग्र के एक अंश का अध्ययन करता है।	समष्टि अर्थशास्त्र समग्र का अध्ययन करता है।
3.	व्यष्टि अर्थशास्त्र का मुख्य विषय कीमत सिद्धांत का विश्लेषण करना है।	समष्टि अर्थशास्त्र का मुख्य विषय राष्ट्रीय आय व रोजगार का विश्लेषण है।
4.	यह व्यक्तिगत संस्थाओं की नीतियों के निर्माण में सहायक है।	यह राष्ट्रीय या सम्पूर्ण समाज की नीतियों के निर्माण में सहायक है।

अथवा

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में केन्द्रीय समस्याओं का हल –

1. पूंजीवादी अर्थव्यवस्था मे कीमत–यन्त्र निर्धारित करता है कि **क्या उत्पादन होगा** एवं उत्पादन किन वस्तुओं का तथा कितनी मात्रा में होगा। इस अर्थव्यवस्था में अनेक प्रभावशाली उत्पादक होते हैं जिनका उद्देश्य अपने लाभों को अधिकतम करना होता है।
   कीमत स्तर उनकी रूचि, आवश्यकता व पसन्दगी के कम को व्यक्त करता है।
2. **उत्पादन कैसे किया जाए–** कीमत यन्त्र ही इस बात का निर्धारण करता है कि वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन के लिए किन साधनों का अधिक प्रयोग किया जाएगा।
3. **उत्पादन किसके लिये किया जाएगा ?**
4. **संसाधनों का पूर्ण तथा कुशलतापूर्वक प्रयोग कैसे हो ?**
5. **विकास एवं नवप्रवर्तन हेतु प्रेरणा प्रदान करके।**

नोट – (किन्ही चार बिन्दुओं का संक्षिप्त वर्णन करने पर पूर्णांक दिये जाएं।) (4)

उत्तर 7. **मांग को निर्धारित करने वाले तत्व –**

1. **वस्तु की कीमत –** किसी वस्तु की मांग को प्रभावित करने वाला सबसे प्रमुख तत्व उसकी कीमत होती है। वस्तु की कीमत में परिवर्तन के परिणामस्वरूप उसकी मांग भी परिवर्तित हो जाती है। प्रायः वस्तु की कीमत के घटने पर मांग बढ़ती है तथा कीमत के बढ़ने पर घटती है।

2. **उपभोक्ताओं की आय –** वस्तुओं की मांगी जाने वाली मात्रा उपभोक्ता की आय पर भी निर्भर करती है। वस्तु की कीमत में कोई परिवर्तन न हो तो आय बढ़ने पर वस्तु की मांग बढ़ जाती है तथा आय कम होने पर वस्तु की मांग भी कम हो जाती है।

3. **<u>धन का वितरण –</u>** समाज में धन का वितरण भी वस्तुओं की मांग को प्रभावित करता है। यदि धन का वितरण असमान है। अर्थात धन कुछ व्यक्तियों के हाथ में ही केन्द्रित है तो विलासिता वस्तुओं की मांग बढ़ेगी। इसके विपरीत धन के समान वितरण अर्थात गरीबी–अमीरी के बीच की दूरी अधिक नही है तो आवश्यकता तथा आरामदायक वस्तुओं की मांग अधिक हो जायेगी।

4. **<u>उपभोक्ताओं की रूचि –</u>** उपभोक्ताओं की रूचि, फैशन, आदत, रीतिरिवाज के कारण भी वस्तु की मांग प्रभावित हो जाती है। जिस वस्तु के प्रति उपभोक्ता की रूचि बढ़ती है, उस वस्तु की मांग भी बढ़ जाती है। उदाहरणार्थ यदि लोग कॉफी को चाय की अपेक्षा अधिक पसन्द करने लगते हैं तो कॉफी की मांग बढ़ जायेगी तथा चाय की मांग कम हो जायेगी।
5. **<u>सम्बन्धित वस्तुओं की कीमतों में परिवर्तन</u>**
6. **<u>जनसंख्या</u>**
7. **भविष्य में मूल परिवर्तन की आशा**
8. **सरकारी नीति**
9. **<u>जलवायु</u>**

नोट– (किन्ही चार बिन्दुओं का वर्णन करने पर पूरे अंक दिये जाये।) (4)

अथवा

मांग के लिए तीन बातें आवश्यक है –
1. मांग एक प्रभावपूर्ण इच्छा है।
2. मांग एक निश्चित कीमत पर मांगी गयी मात्रा है।
3. मांग किसी निश्चित समय के आधार पर मांगी गयी मात्रा है।

अर्थशास्त्र में मांग तभी कहलायेगी जब खरीदने की इच्छा के साथ–साथ उसे खरीदने के लिए आपके पास साधन हों, तथा आप उन साधनों से उसे खरीदने के लिए तत्पर हों। **प्रो. बेनहम** के अनुसार–दिये हुए मूल्य पर किसी वस्तु की मांग उस वस्तु की वह मात्रा होती है जो किसी समय विशेष पर उस मूल्य पर खरीदी जाती है।

मांग के नियम के अपवाद –
1. गिफिन का विरोधाभास
2. प्रतिष्ठासूचक वस्तुएं
3. अज्ञानता के कारण
4. भविष्य में मूल्यवृद्धि की आशा।

नोट– (उपरोक्त बिन्दुओं का संक्षिप्त वर्णन करने पर पूर्ण अंक दिये जाए।)

उत्तर 8. बाजार के विस्तार को प्रभावित करने वाले चार तत्व
1. व्यापक मांग 2. वहनीयता 3. टिकाउपन 4. पूर्ति की आशा
5. यातायात तथा संचार के साधन 6. बैंकिंग व्यवस्था 7. सरकारी नीति
8. शान्ति एवं सुरक्षा

नोट – (किन्ही चार तत्वों का संक्षिप्त वर्णन करना अनिवार्य है।) (4)

अथवा

पूर्ण प्रतियोगिता, बाजार की वह स्थिति है जिसमें कोई भी केता या विक्रेता व्यक्तिगत रूप से बाजार के मूल्य को प्रभावित करने की स्थिति में नहीं होता। तकनीकी शब्दों में पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति

में प्रत्येक क्रेता पूर्णतया लोचदार पूर्ति की स्थिति तथा प्रत्येक विक्रेता या उत्पादक पूर्णतया लोचदार मांग की स्थिति का सामना करता है। अर्थात वस्तु का बाजार में एक मूल्य होता है।

विशेषताएं –

1. क्रेताओं एवं विक्रेताओं की अधिक संख्या
2. समरूप वस्तु
3. फर्मों का स्वतन्त्र प्रवेश तथा बहिर्गमन
4. बाजार का पूर्ण ज्ञान
5. उत्पत्ति के साधनों की पूर्ण गतिशीलता
6. यातायात लागत न होना
7. एक मूल्य

नोट – (किन्ही तीन विशेषताओं का संक्षिप्त में वर्णन अनिवार्य है।)

उत्तर 9. <u>**पूर्ण रोजगार का अर्थ –**</u> पूर्ण रोजगार से आशय उस स्थिति से होता है जिसमें उन सभी व्यक्तियों को जो काम करने की योग्यता तथा सामर्थ्य रखते हैं तथा काम करना चाहते हैं, प्रचलित मजदूरी दर पर रोजगार प्राप्त हो जाता है। पूर्ण रोजगार में अर्थव्यवस्था में अनैच्छिक बेरोजगारी नही होनी चाहिए।

प्रो. डिलार्ड के अनुसार – ''पूर्ण रोजगार वह बिन्दु है जिसके पश्चात् प्रभावपूर्ण मांग में वृद्धि होने पर उत्पत्ति बेलोचदार सिद्ध होती है''।

<u>**पूर्ण रोजगार के लिए उपाय –**</u>

1. उपभोग प्रवृत्ति में वृद्धि
2. निजी विनियोग में वृद्धि
3. सरकारी विनियोग में वृद्धि
4. अन्य उपाय–जनसंख्या को नियंत्रित करना
5. कुटीर एवं लघु उद्योगों को प्रोत्साहन देकर उनका समुचित विकास।
6. कृषि व्यवसाय का विकास
7. पूंजी निर्माण तथा आर्थिक विकास में वृद्धि के उपाय
8. सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार।

नोट – (कोई तीन उपाय लिखने पर ही पूर्ण अंक दिये जायें।) (4)

अथवा

उपभोग फलन का अर्थ – उपभोग फलन या उपभोग प्रवृत्ति आय तथा उपभोग व्यय के बीच सम्बंध को बताता है केन्स ने बताया है कि कुल राष्ट्रीय आय तथा कुल व्यय के बीच एक प्रकार का फलनात्मक सम्बंध पाया जाता है जिसे गणितीय रूप में निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है–

ƃ त्र ϩ ;ल्द्ध

इंसमें ƃ का अर्थ कुल उपभोग व्यय से है, ल का अर्थ है कुल आय से तथा ϩ संकेत है फलन के लिए। इस प्रकार उपभोग फलन यह प्रदर्शित करता है कि आय में परिवर्तन के परिणामस्वरूप उपभोग की मात्रा में कितना परिवर्तन होता है दूसरे शब्दों में उपभोग व्यय आय पर निर्भर करता है। वह उपभोग प्रवृत्ति को दर्शाता है तथा जो भाग बचा लिया जाता है वह बचत प्रवृत्ति को दर्शाता है अतः उपभोग फलन एक तालिका है जो आय के विभिन्न स्तरों पर उनसे सम्बंधित उपभोग व्यय की विभिन्न मात्राओं को व्यक्त करती है।

उपभोग फलन का महत्व –

1. ''से'' के नियम को गलत सिद्ध करना
2. विनियोग का महत्व
3. अपूर्ण रोजगार साम्य की व्याख्या
4. पूंजी की सीमान्त क्षमता की घटती प्रवृत्ति की व्याख्या
5. स्थायी जड़ता का स्पष्टीकरण।

नोट – (किन्ही तीन महत्वों का संक्षिप्त वर्णन करना अनिवार्य है।)

उत्तर 10. **<u>निर्यात बढ़ाने हेतु सरकारी प्रयास –</u>**

1. अवमूल्यन
2. विदेशी व्यापर नीति में सुधार
3. उदारीकृत विनिमय दर प्रबन्ध प्रणाली
4. एकीकृत विनिमय दर प्रबन्ध प्रणाली
5. चालू खाते में पूर्ण परिवर्तनीयता।

नोट – (उपरोक्त में से किन्ही तीन सरकारी प्रयासों का संक्षिप्त वर्णन करने पर पूर्ण अंक दिए जाए।) (4)

अथवा

<u>विदेशी विनिमय दरों में परिवर्तन के कारण –</u>

1. कीमतों में परिवर्तन
2. आयात एवं निर्यात में परिवर्तन
3. पूंजी का आवागमन
4. बैंकिंग सम्बंधी प्रभाव
5. सट्टा सम्बंधी प्रभाव
6. स्टॉक एक्सचेन्ज सम्बंधी प्रभाव
7. संरचनात्मक परिवर्तन सम्बंधी प्रभाव
8. राजनैतिक दशाएं

नोट – (उपरोक्त कारणों में से किन्ही चार कारणों का संक्षिप्त वर्णन करने पर पूर्ण अंक दें।)

उत्तर 11. **<u>सार्वजनिक वित्त एवं निजी वित्त में अन्तर</u>**।

1. आय–व्यय समायोजन में अन्तर
2. उद्देश्य में अन्तर
3. वर्तमान तथा भविष्य के महत्व में अन्तर
4. राज्य का अपेक्षाकृत अधिक प्रभुत्व
5. आय के साधनों में लोच सम्बंधी अन्तर
6. अनिवार्यता की प्रवृत्ति
7. बजट की प्रकृति में अन्तर
8. गोपनीयता का अन्तर

नोट – (उपरोक्त बिन्दुओं में से किन्ही चार का संक्षिप्त वर्णन करना अनिवार्य है।) (4)

अथवा

प्रत्यक्ष कर का भुगतान वही व्यक्ति करता है जिस पर कि यह कर लगाया जाता है, जबकि अप्रत्यक्ष कर एक व्यक्ति पर लगाया जाता है, परन्तु उसका भुगतान पूर्ण अथवा आंशिक रूप से दूसरे व्यक्ति करते हैं। अतः जिस कर का कराघात एवं करापात एक ही व्यक्ति पर पड़ता है वह प्रत्यक्ष कर

कहलाता है। जिस कर का कराघात एवं करापात अलग अलग व्यक्तियों पर पड़ता है। उसे अप्रत्यक्ष कर कहते हैं। भारत में बिक्री कर, उत्पाद शुल्क, मनोरंजन कर, अप्रत्यक्ष कर के उदाहरण है। आयकर निगम कर उपहार कर आदि प्रत्यक्ष कर के उदाहरण है।

नोट – (दो अन्तर – लिखने पर पूरे नंबर दिये जायें।)

उत्तर 12. निर्देशांक ऐसे सापेक्षिक गणितीय अंक है जो किसी अर्थव्यवस्था के किन्ही चरों में किसी समय विशेष में हुए परिवर्तनों को किसी अन्य पिछले समय की तुलना में प्रकट करते हैं।
''निर्देशांक एक ऐसा संख्यात्मक माप है जिसके द्वारा समय स्थान या विशेषताओं के आधार पर किसी चर मूल्य या सम्बंधित चर मूल्यों के समूह में होने वाले परिवर्तनों को मापा जाता है।

सावधानियां –
1. निर्देशांक का उद्देश्य
2. आधार वर्ष का चुनाव
3. वस्तुओं का चुनाव
4. वस्तुओं की कीमतों का चुनाव
5. माध्य का चुनाव
6. भारों का निर्धारण

नोट – (किन्ही तीन सावधानियों का संक्षिप्त वर्णन करना अनिवार्य है।) (4)

अथवा

विस्तार से आशय – किसी समंक श्रेणी में सबसे बड़े पद मूल्य तथा सबसे छोटे पद मूल्य के अन्तर को विस्तार कहते हैं।

गुण –
1. विस्तार की गणना करना व उसे समझना सरल होता है।
2. विस्तार उन सीमाओं को स्पष्ट कर देता है जिनके बीच समंक श्रेणी के मूल्य बिखरे होते हैं।
3. बड़े उद्योगों में वस्तुओं की किस्म नियन्त्रण में यह एक उपयोगी माप होता है।

उत्तर 13. <u>निर्देशांक का महत्व</u>

1. जीवन निर्वाह लागत निर्देशांक मे परिवर्तन का ज्ञान
2. मुद्रा के मूल्य की माप
3. व्यापारी के लिए उपयोगिता
4. उत्पादन के बारे में जानकारी
5. ऋणी तथा ऋणदाताओं को लाभ
6. विदेशी व्यापार नीति में सहायक
7. अन्य लाभ

नोट– (संक्षिप्त वर्णन करना अनिवार्य है।) (4)

अथवा

<u>माध्य विचलन के दो गुण</u> –

1. माध्य विचलन को समझना व इसकी गणना करना अधिक आसान होता है।
2. यह श्रेणी के सभी मूल्यों पर आधारित होता है, इसलिये श्रेणी की संरचना के बारे में इससे यथेष्ट जानकारी प्राप्त होती है।

<u>दो दोष</u>

1. माध्य विचलन की गणना में बीजगणितीय चिन्हों को छोड़ दिया है अतः यह अग्रिम गणितीय विवेचन के लिए असन्तोषजनक है।
2. यह एक अनिश्चित माप है, क्योंकि इसकी गणना किसी भी माध्य से की जा सकती है विभिन्न माध्यों से ज्ञात विचलनों में विभिन्नता होती है।

उत्तर 14. **पूर्ति की लोच का अर्थ –** पूर्ति की लोच से अभिप्राय कीमत में परिवर्तन के प्रतिक्रियास्वरूप पूर्ति की मात्रा में होने वाले परिवर्तन से होता है।

$$\text{पूर्ति की लोच} \quad \frac{\text{पूर्ति में अनुपातिक परिवर्तन}}{\text{कीमत में अनुपातिक परिवर्तन}}$$

पूर्ति की लोच को प्रभावित करने वाले तत्व।

1. वस्तु का स्वभाव 2. उत्पादन लागत 3. उत्पादन की तकनीक
4. समयाविध

नोट – (संक्षिप्त वर्णन करना जरूरी है।)

अथवा

स्थिर लागत – स्थिर लागत वे होती हैं जो कि एक फर्म को स्थिर साधनों को प्रयोग में लाने के लिए करनी पड़ती है। स्थिर साधनों से आशय उन साधनों से है जिनका अल्पकाल में उत्पान की मात्रा के साथ परिवर्तित करना सम्भव नही होता है। जैसे फर्म की स्थिर पूंजी या मशीन, भूमि, भवन इत्यादि।
परिवर्तनशील लागत – परिवर्तनशील लागत वे होती हैं जो कि एक फर्म को परिवर्तनशील साधनों को प्रयोग में लाने के लिए करनी पड़ती है। परिवर्तनशील साधन वे होते हैं जिनको अल्पकाल में भी उत्पादन की मात्रा के साथ परिवर्तित किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में परिवर्तनशील लागतें वे हैं जो कि उत्पादन में परिवर्तन होने पर परिवर्तित होती हैं कच्चे माल की लागत, सामान्य श्रमिकों की मजदूरी इत्यादि परिवर्तनशील लागत में शामिल होती हैं।

अंतर

	स्थिर लागत	परिवर्तनशील लागत
1.	स्थिर लागतों का सम्बंध अल्पकाल में उत्पादन के स्थिर साधनों से होता है।	इनका सम्बन्ध अल्पकाल में परिवर्तनशील साधनों से होता है।
2.	उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन का स्थिर लागतों पर कोई प्रभाव नही पड़ता है।	उत्पादन की मात्रा परिवर्तित होने पर परिवर्तनशील लागतें भी परिवर्तित हो जाती है।
3.	अल्पकाल में उत्पादन बन्द हो जाने पर भी स्थिर लागतें वहन करनी पड़ती है।	अल्पकाल में उत्पादन बन्द हो जाने पर परिवर्तनशील लागतें शून्य हो जाती हैं।

(अंकः 1. 1. 3 त्र 5)

उत्तर 15. **मार्शल** के अनुसार ''किसी देश का श्रम व पूंजी उस देश के प्राकृतिक साधनों के सहयोग से प्रतिवर्ष जो भौतिक वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करते हैं उनका योग उस देश की वास्तविक विशुद्ध वार्षिक आय या राष्ट्रीय लाभांश है''।
अतः एक निश्चित अवधि में वस्तुओं एवं सेवाओं को बिना दोहरी गणना किये जो योग प्राप्त होता है, वह राष्ट्रीय आय कहलाती है।

सकल घरेलू उत्पाद – एक देश की घरेलू सीमा में एक वर्ष में उत्पादित समस्त अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं के मौद्रिक मूल्य का योग सकल घरेलू उत्पाद कहलाता है।

शुद्ध घरेलू उत्पाद – उत्पादन प्रक्रिया के दौरान पूंजीगत वस्तुओं जैसे फैक्ट्री की इमारत, मशीन, संयन्त्र उपकरण आदि का ह्रास होता है। एक समयावधि के बाद इनका प्रयोग करना संभव नही होता है। और इन्हे प्रतिस्थापित करना पड़ता है।

सकल घरेलु उत्पाद के मूल्य में से घिसावट व्यय या पूंजी मूल्य ह्रास को घटाने के पश्चात् जो राशि शेष बचती है उसे शुद्ध घरेलू उत्पाद कहते हैं।

शुद्ध घरेलू उत्पाद त्र सकल घरेलू उत्पाद – मूल्य ह्रास

सकल राष्ट्रीय उत्पाद – सकल राष्ट्रीय उत्पाद एक व्यापक अवधारणा है यदि सकल घरेलू उत्पाद में विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय को जोड़ दिया जाय तो सकल राष्ट्रीय उत्पाद प्राप्त हो जाता है''।

सकल राष्ट्रीय उत्पाद त्र सकल घरेलु उत्पाद. विदेशों से प्राप्त शुद्ध आय

शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद – राष्ट्रीय उत्पादन में से मूल्य ास की राशि घटाने के बाद जो शेष बचता है वह शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद कहलाता है।

शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद त्र सकल राष्ट्रीय उत्पाद – मूल्य ह्रास

(अंकः 1. 2. 2 त्र 5)

अथवा

राष्ट्रीय आय मापन की तीन विधियां निम्नलिखित है–

1. उत्पाद विधि या मूल्य वृद्धि विधि
2. आय विधि
3. व्यय विधि

उत्पाद या मूल्य वृद्धि विधि – इस विधि के अन्तर्गत राष्ट्रीय आय ज्ञात करने के लिए हम या तो मूल्य वृद्धि ज्ञात कर लेते हैं या एक लेखा वर्ष में उत्पादित समस्त वस्तुओं व सेवाओं के मौद्रिक मूल्यों का योग कर लेते हैं। उत्पादन करने वाले उद्यमों को प्रमुखतः निम्नलिखित तीन औद्योगिक क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है–

1. **प्राथमिक क्षेत्र** – इस क्षेत्र में कृषि, वन, खनन, मछली पालन, पशु पालन
2. **द्वितीयक क्षेत्र** – इसे निर्माणी क्षेत्र भी कहते हैं इसमें निर्माण उद्योग, गैस, जल व बिजली आपूर्ति आदि को शामिल किया जाता है।
3. **तृतीयक या सेवा क्षेत्र** – इसमें परिवहन, संचार, व्यापार, बैंक, बीमा, इन औद्योगिक क्षेत्रों का निर्धारणकरने के पश्चात् शुद्ध मूल्य वृद्धि ज्ञात की जाती है। शुद्ध मूल्य वृद्धि ज्ञात करने के लिए निम्नलिखित गणनाएं की जाती है –
   1. उत्पाद का मूल्य 2. मध्यवर्ती उपभोग 3. स्थिर पूंजी के उपभोग का मूल्य या मूल्य ह्रास

नोट – (उदाहरण देने पर पूरे अंक दिये जाये।)

उत्तर 16. **रोजगार के परम्परावादी व कीन्स के सिद्धांत में अन्तर**

	परम्परावादी सिद्धांत	कीन्स का सिद्धांत
1	इस सिद्धांत के अनुसार आय तथा रोजगार का निर्धारण केवल पूर्ण रोजगार स्तर पर होता है।	इस सिद्धांत के अनुसार आय तथा रोजगार स्तर का निर्धारण उसबिन्दु पर होगा, जहां पर सामूहिक मांग, सामूहिक पूर्ति के बराबर होती हैं। इसके लिए पूर्ण रोजगार स्तर का होना आवश्यक नही है।
2	इस सिद्धांत के अनुसार पूर्ण रोजगार पूंजीवादी है। संतुलन की एक सामान्य स्थिति हैं।	इस सिद्धांत के अनुसार, अपूर्ण रोजगार अर्थव्यवस्था की एक सामान्य स्थिति पूर्ण रोजगार की स्थिति तो एक आदर्श एवं विशेष स्थिति है।
3	यह सिद्धांत बाजार के नियम की मान्यताओं पर आधारित है।	यह सिद्धांत उपभोग के मनोवैज्ञानिक नियम पर आधारित है।
4	इस सिद्धांत के अनुसार, पूंजीवादी अर्थव्यवस्था अर्थव्यवस्था कीमत–यंत्र द्वारा संचालित होती है। आर्थिक शक्तियों की स्वतंत्र क्रियाशीलता अर्थव्यवस्था में स्वतः संतुलन स्थापित कर देती है।	कीन्स ने आर्थिक क्रियाओं में सरकारी हस्तक्षेप का समर्थन किया। क्योंकि इनका मानना था कि सामूहिक मांग और सामूहिक पूर्ति में स्वतः समायोजन नहीं होता। इसके लिए सरकारी हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है।
5	इस सिद्धांत के अनुसार, बचत और विनियोग में समानता ब्याज की दर में परिवर्तन द्वारा स्थापित की जाती है।	इस सिद्धांत के अनुसार, बचत और विनियोग में समानता आय में परिवर्तन द्वारा स्थापित होती है।

नोट – (पांच अंतर लिखने पर पूर्णांक दिये जावे।) **(5)**

अथवा

विनियोग गुणक का अर्थ–

विनियोग गुणक का अर्थ यह हमको बताता है कि जब कुल विनियोग की मात्रा में वृद्धि होती है तब इस वृद्धि के परिणामस्वरूप कुल आय में वृद्धि होती है जो कुल विनियोग में हुई वृद्धि की । गुना होती है।

विनियोग गुणक का विचार–

विनियोग में परिवर्तन के परिणामस्वरूप आय में होने वाले परिवर्तन के बीच परिमाणात्मक सम्बंध को बताता है।

दो सीमाएं –
1. समय अन्तराल की उपेक्षा
2. प्रेरित विनियोग की उपेक्षा
3. उपभोग व्यय में सम्बंध
4. अनुमानित परिवर्तन प्रक्रिया की उपेक्षा
5. केवल उपभोग पर ध्यान

महत्व –
1. विनियोग का महत्व
2. व्यापार चक्र की व्याख्या
3. बचत एवं विनियोग में समानता
4. आर्थिक नीतियों के निर्माण में सहायक

नोट – (दो सीमाएं व दो महत्वों का वर्णन करने पर ही पूर्णांक दिए जायें)

उत्तर 17. **घाटे के बजट से आशय–** जब सरकार अपने बजट से कुल सार्वजनिक आय पर कुल सार्वजनिक व्यय की अधिकता प्रदर्शित करती है तो उसे घाटे का बजट कहते हैं। सरकार इस घाटे की आपूर्ति या तो ऋण लेकर पूरा करती है या रिजर्व बैंक में जमा अपने नकद कोषों में कमी करके करती है अथवा नये नोट छाप कर करती हैं जिससे मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि हो जाती है। इसे घाटे की वित्त व्यवस्था कहा जाता है।

अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव
1. कीमत स्तर में वृद्धि
2. मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि
3. रोजगार में वृद्धि
4. पूंजी निर्माण में वृद्धि
5. आय के वितरण में असमानता

नोट – (किन्ही चार प्रभावों का संक्षिप्त वर्णन करने पर पूर्ण अंक दिए जाये।) (5)

अथवा

सरकारी बजट की विशेषताएं।

1. बजट का आधार रोकड़ राशि
2. सकल राशि
3. समस्त क्रियओं का एक बजट
4. व्यय समाप्ति नियम
5. अनुमान वास्तविकता के निकट
6. बजट विधि
7. लेखों की समानता
8. मदों के प्रकार

नोट – (उपरोक्त में से किन्ही पांच विशेषताओं का संक्षिप्त वर्णन करने पर पूर नंबर दिये जाएें)

उत्तर 18. **निर्देशांकों का महत्व**

1. जीवन निर्वाह लागत निर्देशांक
2. मुद्रा के मूल्य की माप
3. व्यापारी के लिए उपयोगिता
4. उत्पादन के बारे में जानकारी
5. ऋणी तथा ऋणदाताओं को लाभ
6. विदेशी व्यापार नीति में सहायक
7. अन्य लाभ

नोट – (किन्ही पांच महत्व का वर्णन करना अनिवार्य है।) (5)

अथवा

<u>अपकिरण का अर्थ –</u> डॉ. बाउले के अनुसार अपकिरण पदों के विचलन या अन्तर का माप है। समंक श्रेणी के विभिन्न मूल्यों का अन्तर अपकिरण है। अपकिरण की माप यह स्पष्ट करती है कि माध्य के चारों ओर पद–मूल्यों का बिखराव किस प्रकार का है ? अपकिरण से श्रेणी की रचना का आभास होता है। अपकिरण शब्द से तात्पर्य श्रेणी के माध्य से निकाले गये विभिन्न पदो के विचलनों के माध्य से होता है। इस प्रकार अपकिरण हमें बताता है कि श्रेणी की केन्द्रीय प्रवृत्ति के एक निश्चित माप से विभिन्न मूल्यों की औसत दूरी क्या है।

<u>उद्देश्य –</u>

1. अपकिरण की माप से श्रेणी की बनावट के बारे में पता चलता है अर्थात इस बात की जानकारी प्राप्त की जाती है कि माध्य के दोनों ओर मूल्यों का बिखराव कैसा है।
2. अपकिरण की मापें यह बताती है कि माध्य किस सीमा तक समूह का प्रतिनिधित्व करता है।
3. अपकिरण की माप ज्ञात करने का एक उद्देश्य विचरण की प्रकृति व कारण निर्धारित करना होता है, जिससे स्वयं विचरणशीलता को नियंत्रित किया जा सके।
4. अपकिरण की मापों के आधार पर दो या अधिक श्रेणियों के मध्य पायी जाने वाली असमानताओं की तुलना करके यह निश्चय किया जाता है कि किस में विचरण की मात्रा अधिक है।

नोट– (अर्थ व चार उद्देश्य लिखने पर ही पूर्णांक दिये जावें।)

उत्तर 19. मांग का नियम कीमत तथा मांग के सम्बंध को व्यक्त करता है। इस नियम के अनुसार कीमत तथा मांग में विपरीत सम्बंध होता है **मार्शल** के अनुसार – ''वस्तु की जितनी अधिक मात्रा बेंचने के लिए होती है उसे उतनी ही कम कीमत पर बेचने के लिए प्रस्तुत करना होगा जिससे कि उसके लिए

ग्राहक मिल सके। मांग की जाने वाली मात्रा कीमत गिरने के साथ बढ़ती है और बढ़ने के साथ गिरती है।

<u>मांग के नियम की मान्यताएं –</u>

1. उपभोक्ता की रूचि एवं पसंदगी में कोई परिवर्तन नही होना चाहिए।
2. उपभोक्ता की आय स्थिर रहनी चाहिए।
3. रीति रिवाजों में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

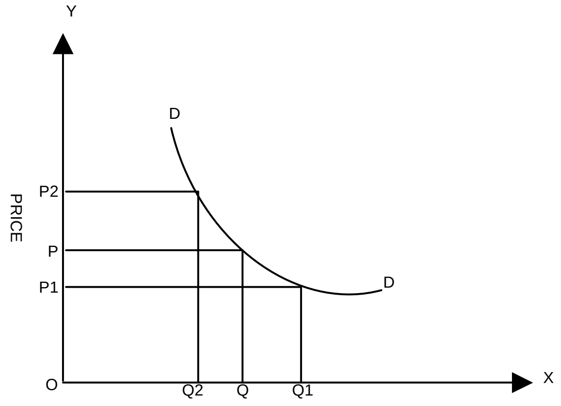

मांग के नियम को चित्र में दिखाया गया है। चित्र से स्पष्ट है कि च्फ कीमत पर वस्तु की मांग क्फ है। यदि कीमत घटकर च फ1 हो जाती है तो मांग बढ़कर क्फ1 हो जाती है। यदि कीमत बढ़कर च्2फ2 हो जाती है तो मांग घटकर क्फ2 हो जाती है।

मांग वक्र दाएं नीचे की ओर क्यों झुकता है ?

इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं रू.

1. सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम।
2. मूल्य प्रभाव।
3. आय प्रभाव।
4. प्रति स्थापन प्रभाव।
5. वस्तु के वैकल्पिक प्रयोग।
6. असंतुष्ट आवश्यकता की संतुष्टि की प्रवृत्ति।

नोट – (कारणों का संक्षिप्त वर्णन अनिवार्य है।) **(अंक 3+3=6)**

अथवा

फर्म के साम्य का अर्थ – साम्य या सन्तुलन का शाब्दिक अर्थ है। ''**परिवर्तन की अनुपस्थिति**'' तथा फर्म के साम्य का अर्थ है उत्पादन की आर्थिक इकाई एसी स्थिति को प्राप्त करना जिसमें परिवर्तन की कोई प्रवृत्ति नही पायी जाती अतः एक फर्म साम्य की स्थिति में तब कही जायेगी जबकि उसके उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन की कोई प्रवृत्ति न हो। स्पष्ट है कि एक फर्म साम्य की स्थिति में तब होती है जबकि वह ''**अधिकतम लाभ**'' या ''**अधिकतम शुद्ध आय**'' प्राप्त कर रही होती है। इसका कारण यह है कि यदि फर्म उत्पादन की मात्रा को परिवर्तित करके अपने लाभ को यदि बढ़ा सकती है तो वह ऐसा अवश्य करेगी। परन्तु उत्पादन के जिस स्तर पर उसे अधिकतम लाभ की प्राप्ति हो रही है उससे वह कभी हटना नहीं चाहेगी क्योंकि इससे उसका लाभ घटेगा ही बढ़ेगा नही। अतः स्पष्ट है कि **फर्म का व्यवहार अपने लाभ को अधिकतम करना होता है और अधिकतम लाभ की स्थिति ही फर्म की साम्य अवस्था मानी जाती है।**

फर्म के साम्य विश्लेषण की मान्यताएं –

1. **फर्म या उत्पादक का व्यवहार विवेकपूर्ण होता है।** अर्थात् प्रत्येक फर्म अपने मौद्रिक लाभ को अधिकतम करने के लिये प्रयत्नशील रहती है।
2. **फर्म अपनी मौद्रिक लागतों को न्यूनतम बनाने के लिए प्रयत्नशील रहती है।** प्रत्येक फर्म यह चाहती है कि उत्पादन के साधनों के उस संयोग को प्राप्त किया जाए जहां न्यूनतम लागतों पर अधिकतम उत्पादन संभव हो।
3. **एक फर्म द्वारा एक वस्तु का उत्पादन** किया जाता है।
4. उत्पादन के प्रत्येक साधन की **पूर्ति पूर्णतः लोचदार है, अतः प्रत्येक उत्पादन के साधन की कीमत स्थिर** होती है। इसके अतिरिक्त यह भी मान लिया जाता है कि साधनों की सभी इकाइयां **समान कार्यकुशलता** वाली होती है।

उत्तर 20. **मुद्रा की परिभाषा –** मुद्रा वह है जो मुद्रा का कार्य करती है। इस प्रकार धातु सिक्के, नोट, चैक, हुण्डिया सभी मुद्रा में शामिल हैं **प्रो. राबर्टसन** के अनुसार ''मुद्रा वह वस्तु है जिसे वस्तुओं की कीमत चुकाने तथा अन्य प्रकार के व्यावसायिक दायित्वों को निपटाने के लिए विस्तृत रूप में स्वीकार किया जाता है।

मुद्रा के कार्य –

1. प्राथमिक कार्य
2. गौण कार्य
3. आकस्मिक कार्य
4. विविध कार्य

नोट – (सभी का संक्षिप्त वर्णन अनिवार्य है।) **(अंक 2+4=6)**

अथवा

रिजर्व बैंक के चार कार्य –

1. नोट – निर्गमन का अधिकार
2. सरकार का बैंकर

3. बैंको का बैंकर

4. विदेशी मुद्रा कोष का संरक्षक

5. साख का नियन्त्रण

6. समाशोधन ग्रह

7. अन्य कार्य

<u>वर्जित कार्य –</u>

1. ऋण तथा अग्रिम प्रदान करना
2. जमाओं अथवा चालू खातों पर ब्याज देना
3. मांग पर देय विपत्रों के अतिरिक्त अन्य विपत्रों को आहरित करना अथवा स्वीकार करना।
4. किसी बैंकिंग अथवा अन्य कम्पनी के अंशों को क्रय करना अथवा उनकी प्रतिभूति पर ऋण प्रदान करना।

नोट –(संक्षिप्त वर्णन करना अनिवार्य है।)

उत्तर 21. प्रमाप विचलन की गणना –

ब्ै प्छज्म्ट ।त	डप्क ट ।स्न्म	f	उण्	क ;31द्ध	कि	कि2
0 दृ 10	5	10	50	.26	.260	6760
10 दृ 20	15	15	225	.16	.240	3840
20 दृ 30	25	25	625	.6	.150	900
30 दृ 40	35	25	875	. 4	. 100	400
40 दृ 50	45	10	450	. 14	. 140	1960
50 दृ 60	55	10	550	. 24	. 240	5760
60 दृ 70	65	5	325	. 34	. 170	5780
		100	**3100**			**25400**

त्र ⎯⎯ उf / छ त्र 3100 / 100 त्र ***31***

□ त्र √(□कि2 / छ)

त्र √(25400 / 100)

/द त्र √254 त्र **15ण94**

(6)

अथवा

श्रेणी अन्तर रीति द्वारा सहसम्बंध गुणांक –

ग		ल		क	क²
ग	श्रेणी ग	ल	श्रेणी ल	श्रेणी अन्तर	श्रेणी अन्तरों के वर्ग
53	8	47	1	.7	49
98	1	25	8	7	49
95	2	32	6	4	16
81	3	37	5	2	4
75	4	30	7	3	9
61	5	40	3	.2	4
59	6	39	4	.2	4
55	7	45	2	.5	25
छ त्र 8				□क त्र 0	□ क² त्र 160

6 □ क²

त त्र 1 . ...

छ ;छ² दृ 1द्ध

6 ग 160   960

त्र 1 . ... त्र 1 . ...

8;8² दृ 1द्ध   504

504 . 960

त्र .... त्र . ण्90

504

अतः ग और ल के मध्य में अत्यधिक मात्रा का ऋणात्मक सह सम्बंध है।